बिहार में असहयोग आन्दोलन की पृष्ठभूमि

कुमारी अंजु, शोध छात्रा–इतिहास विभाग, मानविकी संकाय,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
https://doi.org/10.61410/had.v19i1.173

शोध–सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र महात्मा गांधी के नेतृत्व में प्रारम्भ होने वाले भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन को एक नई दिशा प्रदान करने में अत्यन्त महत्पूर्ण भूमिका निभाने वाले असहयोग आन्दोलन के बिहार प्रान्त में प्रारम्भ होने और किस प्रकार अपार जन समर्थन से उसके क्रमशः व्यापक होते चले जाने के प्रारम्भिक कारणों के संदर्भ में लिखा गया है।

शब्द संकेतः– भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन, कांग्रेस अधिवेशन, बिहार प्रान्त में असहयोग आन्दोलन, खिलाफत क्रमिक विकास।

असहयोग आन्दोलन की स्वीकृति भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक थी। वस्तुतः यहीं से गांधी–युग का प्रारम्भ होता है जो 1947 ई0 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ अपना मुकाम प्राप्त करता है। इस असहयोग आन्दोलन का आरंभ, तुर्की के विभाजन के प्रश्न पर भारतीय मुसलमानों की आहत धार्मिक भावनाओं पर मरहम लगाने के लिए गांधी जी की सलाह पर किया गया था। 9 जून 1920 ई0 को केन्द्रीय खिलाफत समिति की इलाहाबाद की बैठक में असहयोग के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।[1] एक अगस्त 1920 ई0 को गांधी जी ने वायसराय को लिखे पत्र, जिसमें उन्होंने अपने समस्त खिताबों को लौटाने की घोषणा की थी, से इसकी शुरूआत की।[2]

गांधी के असहयोग प्रस्ताव पर विचार हेतु कांग्रेस का कलकत्ता का विशेष अधिवेशन सम्पन्न हुआ। कांग्रेस की विषय–निर्धारिणी समिति में असहयोग के प्रस्ताव पर विचार किया गया जिसमें मुख्यतः तीन दल थे– पहला गांधी का समर्थक जिसमें मुख्यतः खिलाफत के समर्थक मुस्लिम वर्ग था, इनमें शौकत अली, हकीम अजमल खां, डॉ0 अन्सारी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, मद्रास के याकूब हसन, लाहौर के जफर अली खान तथा बिहार के मजहरूल हक प्रमुख थे। दूसरा वर्ग, सरकारी स्कूलों, न्यायालयों तथा कौंसिल चुनावों के बहिष्कार का विरोधी था; इसमें मुख्यतः पं0 मदन मोहन मालवीय, चितरंजन दास तथा विपिन चन्द्र पाल थे जबकि तीसरा वर्ग, असहयोग कार्यक्रम का ही विरोधी था, इसमें मुहम्मद अली जिन्ना तथा श्रीमती एनी बेसेन्ट प्रमुख थीं।[3] अन्ततः 873 के विरूद्ध 1855 मतों के समर्थन से असहयोग का प्रस्ताव पारित हो गया।[4]

कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के समय कलकत्ता में ही अखिल भारतीय मुस्लिम लीग तथा केन्द्रीय खिलाफत समिति की भी विशेष बैठकें हुईं जिनकी अध्यक्षता क्रमशः मुहम्मद अली जिन्ना तथा मौलाना अब्दुल मजीद ने की। दोनों ही संगठनों ने कांग्रेस के उक्त प्रस्तावों का समर्थन किया।[5]

कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन (4–9 सितम्बर, 1920 ई0) से लौटकर मजहरूल हक और अन्य सात लोगों ने जिनमें प्रमुखतः राजेन्द्र प्रसाद, गोरख प्रसाद, ब्रज किशोर प्रसाद, धरणीधर तथा मोहम्मद शफी आदि प्रमुख थे[6], कांग्रेस के प्रस्तावों के अनुसार कौंसिल के चुनावों से अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली।[7] मजहरूल ने चुनावों से अपने हटने की घोषणा 'सर्चलाइट' के सम्पादक को लिखे पत्र में की, जो 'सर्चलाइट' के 19 सितम्बर 1920 के अंक में प्रकाशित हुआ। यह सर्चलाइट अखबार लगातार असहयोग आन्दोलन का समर्थन कर रहा था। उसने अपने 12 सितम्बर, 1920 के अंक में गांधी के असहयोग आन्दोलन का जोरदार समर्थन करते हुए घोषणा की थी कि यदि नौकरशाही के पास रौलट एक्ट है तो जनता के पास असहयोग।[8]

इस बीच कलकत्ता के विशेष अधिवेशन से लौटते समय कानपुर के मौलाना अब्दुल कादिर आजाद सोमानी आरा में रूके जहाँ उन्होंने दो जनसभाओं को सम्बोधित किया और लोगों से असहयोग के समर्थन की अपील की।

पटना ला कॉलेज के छात्र सैयद मुहम्मद शेर तथा बिहार नेशनल कॉलेज के छात्रों अब्दुल बारी एवं मुहम्मद शाकी, जो खिलाफत आंदोलन में प्रमुखता से भाग लिए थे, ने अपने कॉलेज के प्रिंसिपल को पत्र

लिखा कि उनका नाम कॉलेज के रजिस्टर से हटा दिया जाय।[9] मजहरूल हक ने भी अपने दोनों लड़कों को पटना न्यू कॉलेज से हटा दिया और ये सभी लड़के असहयोग के प्रचार में जुट गये।

गुलाम इमाम ने आरा तथा स्वामी विद्यानन्द ने भागलपुर की जनसभाओं में उग्र भाषण दिये तथा लोगों से असहयोग में भाग लेने की अपील की। इसी बीच जमशेदपुर की मेसर्स टाटा एण्ड कम्पनी के कर्मचारियों ने अपनी सुविधाओं के लिए हड़ताल कर दी। 10 सितम्बर, 1920 ई0 को आयोजित उनकी सभा को बरार के वकील श्री अनंत अनी, बंबई के कांग्रेसी प्रतिनिधि श्री परांजपे तथा नागपुर के वकील राने वैद्य ने संबोधित किया। इन्होंने कर्मचारियों को स्वदेशी अपनाने तथा असहयोग आन्दोलन में भाग लेने हेतु प्रेरित किया।[10]

10–11 अक्टूबर, 1920 ई0 को डाल्टनगंज में बिहारी छात्र सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता सी0एफ0 एन्ड्रयूज ने की। इसमें करीब एक हजार लोगों ने भाग लिया जिसमें 250 प्रतिनिधि दूसरे प्रान्तों से आये थे। इस सभा में मजहरूल हक ने अपने लम्बे भाषण के माध्यम से छात्रों को राजनीति में भाग लेने तथा असहयोग एवं स्वदेशी अपनाने हेतु प्रेरित किया।

राजेन्द्र प्रसाद ने असहयोग आन्दोलन में भाग लेने का निश्चय करने के बाद न केवल परिषदों के चुनाव की उम्मीदवारी से अपना नाम वापस लिया अपितु पटना विश्वविद्यालय के सीनेट और सिंडिकेट की सदस्यता से भी त्यागपत्र दे दिया तथा अपनी वकालत भी छोड़ दी।[11]

बिहार कांग्रेस के असहयोगी नेता तथा खिलाफत समिति के नेता विभिन्न स्थानों पर सभायें करके तथा लोगों को असहयोग के कार्यक्रमों से परिचित कराते तथा सरकार से सहयोग न करने की अपील करते थे। ऐसी सभायें गया में 8 अक्टूबर, डाल्टनगंज में 10 अक्टूबर, हिल्सा में 29 अक्टूबर, खुशरूपुर में 3 नवम्बर, बाढ़ में 4 नवम्बर, आरा में 6 नवम्बर और बख्तियारपुर में 9 नवम्बर को हुई।[12]

नवम्बर के पूर्वार्द्ध में नये सुधारों के अनुसार परिषदों का चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें बहुत कम मतदाताओं ने मतदान किया। विशेषतः मुस्लिम इलाकों में बहुत ही कम मतदान हुआ। शाहाबाद तथा दरभंगा के दो गैर–मुस्लिम चुनाव क्षेत्रों से किसी भी प्रतिनिधि को नामांकित नहीं किया जा सका जबकि भागलपुर के मुस्लिम चुनाव क्षेत्र से कोई प्रत्याशी चुनाव में नहीं उतरा था।[13]

नवंबर के अन्त तक बिहार में सरकारी स्कूलों व कॉलेजों के बहिष्कार की दिशा में विशेष रूप से किये जा रहे प्रयासों को बहुत हद तक सफलता मिलने लगी थी। मुख्यतः पटना, तिरहुत तथा भागलपुर संभाग में विशेष सफलता प्राप्त हो रही थी। अकेले पटना में ही सरकारी शिक्षण संस्थाओं को छोड़ने के लिए 70 छात्रों ने आवेदन–पत्र दिए थे।[14]

असहयोग आन्दोलन को तीव्रता प्रदान करने की दृष्टि से महात्मा गांधी ने दिसम्बर, 1920 ई0 में बिहार का दौरा किया। वे पहली दिसम्बर की शाम को पटना पहुँचे। उनके साथ मौलाना शौकत अली तथा अबुल कलाम आजाद भी पटना आये और वे लोग मजहरूल हक के यहाँ रूके।[15] गांधी जी ने 2 दिसम्बर की सुबह फुलवारी में एक सार्वजनिक सभा को संबोधित किया तथा उसी दिन मजहरूल हक के निवास पर भी एक सभा को सम्बोधित किया। 3 दिसम्बर को वहीं छात्रों की एक सभा को संबोधित किया जिसमें उन्होंने छात्रों को सरकारी स्कूलों को छोड़ने की सलाह दी। 4 दिसम्बर को सिकंदर मंजिल में महिलाओं की सभा को संबोधित किया, जिसमें उनसे चरखा चलाने तथा अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ाने का अनुरोध किया। इसी सभा में मजहरूल हक की बीवी ने अपने सोने के चार हार, जिन पर जवाहरात जड़े थे, गांधी जी को समर्पित किया। अनेक औरतों ने अपनी अंगूठियाँ, कान की बालियाँ आदि गांधी जी को भेंट की।[16]

4 दिसम्बर को ही गांधी जी ने आरा में एक जनसभा को संबोधित किया। 5 दिसंबर को गया की जनसभा में शरीक हुए तथा शाम को पटना लौट आये। 6 दिसंबर को छपरा की सार्वजनिक सभा को संबोधित किये तथा वहीं बाबू सरयू प्रसाद के यहाँ रात्रि विश्राम किए। 7 दिसंबर को गांधी जी मुजफ्फरपुर गये जहाँ उन्होंने तिलक मैदान में एक विशाल जनसभा को संबोधित किया। 8 दिसंबर को वे मोतिहारी गए जहाँ से बेतिया चले गये। उसके बाद वे दरभंगा, समस्तीपुर, मुंगेर तथा भागलपुर आदि शहरों में अनेक सार्वजनिक सभाओं को संबोधित करने के उपरान्त बंगाल चले गए।

गांधी जी ने इन सभाओं में असहयोग आन्दोलन के औचित्य पर प्रकाश डाला तथा लोगों से सहयोग की अपील की। उनकी इस बिहार यात्रा के दौरान लगभग 7000 रुपये नकद तथा महिलाओं द्वारा दिये गये अनेक कीमती आभूषण भी प्राप्त हुए।[17]

बिहार में अपनी दिसम्बर यात्रा के दौरान सभाओं में भाषण करने के अतिरिक्त गांधी जी विशेष बैठकों में छात्रों से भी मिलते थे। त्रिपक्षीय बहिष्कार के अपने कार्यक्रम में विदेशी वस्तुओं, न्यायालयों तथा सरकारी स्कूलों व कॉलेजों का बहिष्कार में अब वे स्कूलों व कॉलेजों के बहिष्कार पर सर्वाधिक जोर दे रहे थे। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्कूल, कॉलेज तथा विद्यापीठ की स्थापना की दिशा में भी विशेष प्रयास किया गया।[18]

बिहार प्रान्त में सरकारी शिक्षण संस्थाओं के बहिष्कार की स्थिति पर बिहार तथा उड़ीसा के सार्वजनिक शिक्षण निदेशक (Director of Public instructions) ने 12 दिसंबर, 1920 ई0 की अपनी रिपोर्ट में लिखा कि– इस दिशा में पटना तथा तिरहुत संभाग के अतिरिक्त अन्यत्र नाममात्र की ही सफलता मिली है[19] किन्तु वास्तविकता यह भी कि पूरे बिहार से अनेक छात्रों ने असहयोग आन्दोलन में भाग लेने हेतु स्कूल–कॉलेजों का बहिष्कार किया था। 7 छात्रों ने रांची जिला स्कूल छोड़ दिया। पटना कॉलेज के भी 3–4 छात्रों ने कॉलेज छोड़ दिया तथा एक सहायक अध्यापक और एक प्रोफेसर जगन्नाथ प्रसाद पाण्डेय ने भी त्यागपत्र दे दिया। बी0एन0 कॉलेज के 26 छात्रों ने कॉलेज छोड़ने हेतु आवेदन किया तथा 8 दिसंबर तक 20 अन्य छात्रों ने भी कॉलेज छोड़ने का आवेदन कर दिया था। बिहार इंजीनियरिंग स्कूल के 15 छात्रों ने नवम्बर तक स्कूल छोड़ने का आवेदन किया था किन्तु बाद में 6 छात्रों ने अपना इरादा बदल दिया। न्यू कॉलेज के 25 छात्रों ने तथा लॉ कॉलेज के 6 छात्रों ने नवंबर तक कॉलेज छोड़ दिया था। सरकारी मदरसा के 8 छात्रों ने 17 नवंबर, 1920 तक मदरसा छोड़ दिया था। मुजफ्फरपुर जिला स्कूल के 6 छात्रों ने नवंबर तक स्कूल छोड़ दिया था जबकि गांधी जी की यात्रा के परिणामस्वरूप अभी और अनेक छात्रों के स्कूल–कॉलेज छोड़ने की प्रबल संभावना थी।[20]

इसके अतिरिक्त इस दौरान राष्ट्रीय स्कूल व कॉलेज खोलने की दिशा में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई। नवादा में एक राष्ट्रीय स्कूल खोला गया जिसमें अनेक छात्रों ने अपना नाम लिखवाया। इसी प्रकार बाकरगंज में एक राष्ट्रीय स्कूल खोला गया जिसमें छात्रों की अच्छी संख्या हो गई थी। पटना संभाग के चार हाईस्कूल, बी0एन0 कॉलेजियट स्कूल, बांकीपुर, टी0के0 घोष अकादमी, बांकीपुर, एंग्लो–संस्कृत स्कूल, बांकीपुर तथा सोगरा वक्फ़ स्कूल भी राष्ट्रीय स्कूल के रूप में परिवर्तित हो गए।

गांधी जी के बिहार दौरे के बाद शिक्षण संस्थाओं के बहिष्कार की गति में तीव्र वृद्धि हुई। सार्वजनिक शिक्षण निदेशक की रिपोर्ट के अनुसार 14 दिसंबर, 1920 तक बिहार इंजीनियरिंग स्कूल के 131 छात्रों में से मात्र 54 छात्र ही स्कूल में रह गए जबकि भूमिहार ब्राह्मण कॉलेज, मुजफ्फरपुर के 30 छात्रों ने कॉलेज छोड़ दिया। नार्थबुक जिला स्कूल, दरभंगा के 8 छात्रों ने स्कूल छोड़ दिया।[21]

इसके अतिरिक्त बिहार के शाहाबाद जिला में असहयोग का एक विलक्षण उदाहरण दिखाई दिया, जहाँ देशी शराब की बिक्री के विरूद्ध अचानक 'पूसीफूट' (संभवतः बिल्ली के पंजे के निशान से अंकित देशी शराब का कोई ब्राण्ड था जिसके विरोध के कारण इसे 'पूसीफूट' आन्दोलन नाम दिया गया) आन्दोलन शुरू हो गया। फलतः नवंबर के उत्तरार्द्ध में, पूर्वार्द्ध की तुलना में देशी शराब की बिक्री में 10 से 20 प्रतिशत तक की कमी हो गई। इस प्रकार असहयोग आन्दोलन के दौरान पूरे बिहार में यह एक विलक्षण उदाहरण रहा।

असहयोग कार्यक्रम पर अन्तिम रूप से निर्णय हेतु अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पैंतीसवां अधिवेशन 26 से 31 दिसम्बर 1920 ई0 तक नागपुर में श्री विजय राघवाचार्य के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ जिसमें गांधी के असहयोग कार्यक्रम के विरोध हेतु देशबन्धु चितरंजन दास अकेले ही 250 प्रतिनिधि लेकर नागपुर गये थे, किन्तु उन्होंने गांधी जी के प्रस्ताव का विरोध नहीं किया। फलतः गांधी जी का असहयोग का प्रस्ताव विशाल बहुमत से पारित हो गया।[22]

इस प्रकार असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रम को तेजी से चलाते हुए बिहार ने सरकार की सारी क्रूर यातनाओं को उल्लेखनीय धैर्य और शान्ति के साथ सहन किया। 22 दिसम्बर, 1921 के यंग इण्डिया ने इस प्रकार इसका उल्लेख किया– ''बिहार वह प्रान्त है जिसने सर्वाधिक अहिंसा को बनाये रखा है। इसने असहयोग के अधिकांश मुद्दों पर श्रेष्ठ परिणाम दिए हैं।''[23]

22 तथा 23 दिसम्बर को जब प्रिंस ऑफ वेल्स पटना आये तो उस दिन उनके विरोध में वहाँ पूर्ण हड़ताल रही। उस दिन शहर की प्रत्येक दुकान बन्द थी और उनके शटर गिरे हुए थे, मुख्य राजमार्ग सूना था, किराये की कोई गाड़ी नहीं चल रही थी और उन रास्तों पर कोई भीड़ नहीं थी जिनसे होकर जुलूस निकला।[24]

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का छत्तीसवाँ अधिवेशन अहमदाबाद में 27–28 दिसम्बर, 1921 को हुआ। इसमें बिहार के 558 प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिनमें से 22 विषय समिति के सदस्य थे जिसकी बैठक 24, 25, 27 तथा 28 दिसम्बर को हुई। अधिवेशन का मुख्य प्रस्ताव जिसे महात्मा गांधी ने रखा और कांग्रेस ने पारित किया, अब तक विपुल उत्साह के साथ चलाये गए शान्तिपूर्ण असहयोग को जारी रखने की दृढ़ता का था। इसने दृढ़ता पूर्वक घोषणा किया कि ''सविनय अवज्ञा ही सशस्त्र विद्रोह का एकमात्र और कारगर विकल्प है।'' इसलिए इसने सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं और आम लोगों को जो शान्तिपूर्ण तरीकों में विश्वास रखते थे, 'तब जबकि बड़ी संख्या में लोग असहयोग के तरीकों से परिचित हो चुके थे, व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक स्तर पर सविनय अवज्ञा का पालन करने की सलाह दी गई।[25]

संदर्भ :

1. दि कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, भाग–18, पृ0 484
2. वही, पृ0 104–106
3. मिनाल्ट जी : दि खिलाफत मूवमेन्ट, पृ0 114
4. बख्शी : गांधी एण्ड नान–कोआपरेशन, पृ0 61
5. टॉक, बी0एम0 : नान कोआपरेशन मूवमेन्ट इन इण्डियन पॉलिटिक्स, 1919–24, संदीप प्रकाशन, दिल्ली, 1978, पृ0 47
6. दत्त, के0के0 : बि0स्वा0आ0, खण्ड–1, पृ0 327
7. होम डिपार्टमेन्ट ''पोलिटिकल'', फाइल नं0–84, दिसम्बर, 1920, बिहार
8. वही, फाइल नं0 70, सित0, 1920 एवं अहमद तथा झा : मजहरूल हक, पृ0 57
9. वही
10. हो0पो0डि0, फाइल नं0 84, दिसम्बर, 1920
11. दत्त, राजेन्द्र प्रसाद, पृ0 55 एवं प्रसाद राजेन्द्र : आत्मकथा, पृ0 158
12. दत्त, के0के0, बि0स्वा0आ0, खण्ड–1, पृ0 329
13. होम पो0डि0, फाइल नं0–74, दिसम्बर, 1920
14. होम पो0डि0, फाइल नं0–33, जनवरी, 1921
15. दत्त, के0के0 : गांधी जी इन बिहार, पृ0 73
16. वही
17. यंग इण्डिया, 20 दिसम्बर तथा दत्त, बि0स्वा0आ0, पृ0 329
18. दत्त, के0के0 : बि0स्वा0आ0, खण्ड–1, पृ0 330
19. होम पो0डि0, फाइल नं0–35, फरवरी, 1921 तथा रामसेवक : बिहार, पृ0 121
20. दि डायरेक्टर ऑफ पब्लिक इंसट्रक्शन, बिहार एण्ड उड़ीसा की रिपोर्ट तथा रामसेवक : बिहार, पृ0 121
21. होम पो0डि0, फाइल नं0–77, फरवरी, 1921 के साथ संलग्न सार्वजनिक शिक्षण निदेशक का नोट
22. गुप्त : राष्ट्रीय आन्दोलन,. पृ0 361
23. यंग इण्डिया, दि0–22 दिसम्बर, 1921
24. बिहार एण्ड उड़ीसा इन 1921, पृ0 156
25. दत्त, के0के0, बिहार में स्वातन्त्र्य आन्दोलन का इतिहास, खण्ड–1, पृ0 409